भारतीय समाज में कामकाजी महिलाएँ और हिन्दी कहानियाँ

मीनाक्षी सिंह
शोध छात्रा, कन्या गुरुकुल परिसर, हरिद्वार, उत्तराखण्ड,
वर्तमान निवास– 528/7, गली नं0–5, ब्लाक–6,
विश्वास नगर, शाहदरा, दिल्ली।

आज का समाज तीव्र गति से बदलता हुआ समाज है और यह बदलाव बहुत सी दिशाओं में है। भारत में स्वतंत्रता के बाद बदलती हुई सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियों में महिलाओं की शिक्षा एवं रोजगार के अवसरों में काफी वृद्धि हुई है और हालातों के फलस्वरूप महिलाओं के लिए अभिव्यक्ति और प्रतिष्ठा के नये मार्ग खुल गये हैं। महिलाओं को दी गई कानूनी और राजनीतिक सुविधाओं के कारण उनकी भावना एवं विचारों में परिवर्तन आया जिसके कारण जीवन के महत्वपूर्ण प्रश्नों के प्रति उनका दृष्टिकोण भी तेजी से बदला है।

भारत के शहरी समाज में शिक्षित स्त्रियों के लिए शादी एवं नौकरी समाजशास्त्रियों के लिए महत्वपूर्ण विषय बन गया है। वैसे तो स्त्रियों के घर से बाहर निकलकर काम करने की घटना कोई नई बात नहीं क्योंकि गाँवों में स्त्रियाँ हमेशा ही घरों के कार्यों के साथ–साथ पुरुषों के साथ खेतों मे कार्य करती आ रही हैं तथा शहरों में गरीब एवं मजदूरों की स्त्रियाँ हमेशा ही घरों में काम करते हुए पुरुषों के साथ भी कार्य करती रही हैं। इसी कारण वे परिवार के पालन–पोषण को प्राथमिकता नहीं दे पाती हैं। वहीं वर्तमान काल में मध्यम वर्ग एवं उच्च वर्ग की शिक्षित महिलाओं ने घरों से बाहर निकलकर परिवार के पोषण के साथ–साथ उपयोगी नौकरियों में अपना सहयोग देना प्रारम्भ किया। यह अपेक्षाकृत नई बात है। इस संदर्भ में वार्ड महोदय ने टिप्पणी करते हुए लिखा है,

''गरीब महिलाएँ अपनी न्यूनतम आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए श्रम करती हैं जबकि धनी महिलाएँ अपनी बौद्धिक सन्तुष्टि के लिए काम–काज करती हैं।''[1]

इसी प्रकार कामकाजी महिलाओं को अपने कार्यों के लिए जिन अनेकों महत्वपूर्ण समस्याओं का सामना करना पड़ता है उनमें महत्वपूर्ण समस्या है–पुरुष सह–कर्मचारियों के साथ काम करना व उनसे सम्बन्ध एवं सम्पर्क की सीमा निर्धारित करना भी है। इसी प्रकार पुरुषों के साथ यह भी समस्या बनी रहती है कि स्त्री सहकर्ता के साथ कितना नजदीक का सम्बन्ध स्थापित करो। विचारक प्साटा के अनुसार

''स्त्रियों की शिक्षा, नौकरी, विवाह के सम्बन्धों में पुरुषों के बराबर समता का अधिकार देने की बात सिद्धान्त रूप से सही है, परन्तु अनेकों कारणों से व्यवहार में सभी नौकरियों एवं व्यवसाय में भेदभाव किया जाता है।''[2]

पहले अनेक व्यवसायों में महिलाओं को बराबर समता का अधिकार देने की बात सही है, परन्तु अनेकों कारणों से पहले अनेक व्यवसायों में महिलाओं को अवसर नहीं दिये जाते थे। भले ही महिलाओं की कार्य करने की क्षमता एवं योग्यता पुरुषों के समान ही क्यों न हो परन्तु विभिन्न अध्ययनों से यह बात स्पष्ट हो गई है कि महिला कार्यकता किसी भी पुरुष कार्यकर्ता के समान ही कार्य कुशल है। महिलाओं की स्थिति सुधार कर ही एक अच्छे समाज की कल्पना की जा सकती है। स्वामी विवेकानन्द ने महिलाओं के विषय में कहा है–

''जब तक महिलाओं की स्थिति में सुधार नहीं होगा, विश्व के कल्याण की कोई संभावना नहीं है।''[3]

वहीं महिलाओं की स्थिति से विचलित एक कवि ने समाज से प्रश्न किया है –''देश में औरत अगर बेआबरू नाशाद है।
दिल पे हाथ रखकर कहिए, वो देश क्या आजाद है।।''[4]

वर्तमान में महिलाएं भी पुरुषों की भांति जटिल प्रतियोगिताएं देकर पद प्राप्त करती हैं परन्तु महिलाओं को पुरुषों की अपेक्षा पदोन्नति के अवसर केवल

महिला होने के कारण छोड़ने पड़ते हैं। महिलाओं पर कार्यभार अधिक होता है। विशेषतः ऐसी कामकाजी महिलाएँ जिनकी पारिवारिक भूमिका में अधिक बदलाव नहीं होते हैं और वे अपने व्यक्तित्व व प्रेरणा में अपने कैरियर के प्रति अधिक सशक्त हैं, परन्तु उनको परिवारों का वांछित सहयोग नहीं मिलता तो ऐसी महिलाओं को अधिक संघर्ष करना पड़ता है। चित्रा मुद्गल की कहानी 'प्रमोशन'' में हम देख सकते हैं कि कहानी की प्रमुख चरित्र कामकाजी स्त्री के प्रति घर के प्रमुख यानि पति का रवैया उसके काम के प्रति कितना नकारात्मक है। चित्रा मुद्गल अपनी कहानी में कहती है कि ''स्त्री जब कहीं कार्य करती है तो वहाँ उसे आगे बढ़ते हुए भी लांछित किया जाता है। किसी पुरुष का प्रमोशन उसकी मेहनत का परिणाम होता है तो वहीं स्त्री का प्रमोशन उसके शरीर के कारण किया जाता है। किसी भी स्त्री सहकर्मी के साथ शारीरिक सम्बन्ध बनाना पुरुष के लिए गौरव की बात होती है। पुरुष स्त्री को केवल शरीर मानता है, वस्तु मानता है, इंसान नहीं मानता। स्त्री की मेहनत, प्रतिभा, लगन उसके लिए कोई मायने नहीं रखती।'' इसी कहानी म ललिता को प्रमोशन मिलना उसके पति सुभाष को कितना हीन बना देता है। वह अपनी पत्नी के प्रमोशन पर कहता है कि –

''इस कम्पनी में नौकरी करते हुए अभी तुम्हें तीन साल भी पूरे नहीं हुए और डॉ0 कोठारी तुम पर इतने मेहरबान क्यों हैं? ..... इस कम्पनी में नाकरी करते हुए तीन साल भी नहीं हुए और इतना बड़ा प्रमोशन। विभाग में तुमसे वरिष्ठ, अनुभवी, योग्य व्यक्ति पड़े हुए हैं, इतने वर्षों में उनका नम्बर नहीं लगा रहा है और तुम अचानक तीन सौ लोगों को पछाड़ विभाग की इंचार्ज बन गई।''[5]

इसी प्रकार मधु कॉंकरिया को कहानियाँ भी स्त्री शोषण के विरुद्ध आवाज उठाती हैं। इनके कथा साहित्य में बदलते समाज में स्त्रियों के शोषण के साथ–साथ स्त्री संघर्ष की अभिव्यक्ति हुई है। वे कहती है–

''स्त्री प्रकृति की सुकोमल कविता है। लेकिन स्त्री विमर्श पर तमाम करुणा क्रंदन के बावजूद उसकी स्थिति जस की तस है। वह लेखक हो, कलाकार हो, साधु हो या गृहस्थ, उसे अपनी जगह बनाने के लिए विद्रोह करना पड़ता है। दो पहिए की स्त्री पुरुष की गाड़ी कभी–कभी स्त्री को अकेले ही खींचनी पड़ती है। कई बार जीवन की अनिवार्य सुविधाएँ तक तज देनी पड़ती हैं। स्त्री समाज म जितने भी उच्च स्थान पर कार्यरत हो परन्तु जीवन के सारभूत प्रश्नों से बच नहीं सकती।''[6]

इन्होंने अपने साहित्य में आधुनिक समाज में समस्याओं से घिरी साधारण स्त्री के जीवन संघर्ष को अपने साहित्य में मुखरित किया है। इनके अनुसार स्त्री जितनी मानवी होगी, अधिकार सम्पन्न होगी, उतना ही वहाँ विवाह के बन्धन को तोड़ना चाहेगी क्योंकि सामाजिक विकास के साथ–साथ उसके जीवन में पुरुष की भूमिका कम से कम कमतर होती जाती है। पैसा कमाना, परिवार चलाना, संतानों के साथ संतान का भरण–पोषण, यदि सब कुछ स्त्री को ही करना है तो उसके जीवन में पति की भूमिका नहीं के बराबर हो जाती है। स्त्री–पुरुष का साथ खोजेगी। एक दोस्त चाहेगी, पर विवाहित जीवन में उसका शासन न स्वीकारेगी। इनके उपन्यास ''पत्ताखोर में वनश्री एक अविवाहित पत्नी बनकर, साज–श्रृंगार कर व अपनी नशीली बातों के जरिये भी जब भोलेनाथ जैसे पति में काम भाव नहीं जगा सकी तो उसमें धीरे–धीरे निराशा घर करने लगी और इस नीरस वैवाहिक जीवन से मुक्ति पाने के लिए उसने नौकरी कर ली।[7]

इसी प्रकार इनकी एक अन्य कहानी ''लेडी बॉस'' में मैडम कैरियरस्ट औरत थी। कम्प्यूटर में एम0टेक0 करने के बाद अमेरिका में मास्टर डिग्री हासिल कर उसने सॉफ्टवेयर कम्पनी खोली। पति मास्को में रहते थे पर वो उसके साथ मास्को में नहीं गई। उसको जापान व जर्मनी के आर्डर मिलने लगे। अपने काम के कारण वे भारत की सर्वाधिक प्रतिभाशाली महिला बन गई। मुख्य अखबारों के पहल पन्ने पर उनकी तस्वीरें छपीं। दस–बारह वर्षों तक यह सिलसिला चला। वहीं दूसरी ओर उनके पति ने अपने से आधी उम्र की रशियन महिला से विवाह कर लिया और इनसे तलाक ले लिया। मैडम के पति इनको मास्को बुलाकर अपने साथ ही रखना चाहते थे परन्तु खुद भारत नहीं आना चाहते थे लेकिन मैडम ने मास्को जाने से मना कर दिया परन्तु वे कैरियर की ऊँचाईयों पर खुद को बहुत अकेला महसूस करती थी जिसके कारण उनको हिस्टीरिया के दौरे पड़ने लगे।

उनकी एक अन्य कहानी ''चूहे को चूहा ही रहने दो'' में नायिका का पति शक करता था। उसने अपने शक के कारण अपनी पत्नी की देह की जमीन पर ऐसे कंटीले बाड़े डाल रखे थे कि वह किसी भी उम्र के पुरुषों से बातें भी नहीं कर सकती थी। एक बार नायिका ने अपने छोटे भाई के मित्र से पति के सामने हाथ मिलाया तो पति ने उसके जाने के बाद उसके हाथों को दीवार पर जोर से रगड़ डाला जिससे कि उसका स्पर्श मिट जाये। इसी अपमान का बदला लेने के लिए उसने खुद को गैर मर्द के हवाले कर दिया। बेशक उसके पति को इस बात का कभी पता न चले पर इससे नायिका को आत्मिक शांति जरूर मिली। उसे यह सन्तोष था कि वह अब पवित्र नहीं रही, जैसा उसका पति उसे पाकीजा मानता था।

इसी प्रकार इनकी नायिकाओं का संसार अपने स्वयं की पहचान का संसार है। अपने स्व की स्थापना ही उनका परम लक्ष्य है। लेखिका कहती है–

''विवाह एक सामाजिक संस्कार है, कोई हवा पानी नहीं कि इसके बिना जीवन जिया ही न जा सके।''[8]

बदलते हुए जोवन मूल्य परिवार की जीवन शैली को प्रभावित कर रहे हैं। प्रभा खेतान ने कहा है कि

''आज की स्त्री ने सदियों की खामोशी तोड़ी है। उसकी नियति में बदलाव है। उसके व्यक्तिगत जीवन का उद्देश्य, दर्शन,उसका मन–मिजाज सभी तो बदल रहा है।''[9]

कोलम्बिया विश्वविद्यालय में ''महिला शक्ति'' विषय पर आयोजित एक कांफ्रेंस में एक वक्ता फील्डमैन ने विवाहित महिलाओं के जीवन में रोजगार की बाबत चर्चा करते हुए कहा,

''यह अपेक्षाकृत नई घटना है, अब मध्यवर्गीय कामकाजी पत्नी आर्थिक, मनोवैज्ञानिक, राजनीतिक तथा सामाजिक ताकत बन चुकी है और उनकी इस नवीनता उनकी बढती संख्या उसकी मनोवैज्ञानिक, सामाजिक, आर्थिक स्थिति का परिवार समाज पर प्रभाव पड़ता है। इस तथ्य की पड़ताल आवश्यक है।''[10]

आज समाज के दृष्टिकोण में बहुत परिवर्तन आ चुका है। अब कामकाजी महिलाओं की छवि सहन–शीलता की प्रतिमूर्ति की भांति मानी जाती है। अब महिलाओं को केवल कुछ सीमित नौकरियों में ही नहीं अपितु लिपिक, आशुलिपिक, निजी सहायक तथा बड़े–बड़े अधिकारियों के रूप में देखा जा सकता है। यही नहीं आज महिलाएँ अपने साहस के बल पर पूरे आत्मविश्वास के साथ हर क्षेत्र में कामयाबी पर परचम लहरा रहो है। आज महिलाएँ न केवल ट्रेन व हवाई जहाज को भी सफलतापूर्वक चला रही हैं। अपितु अंतरिक्ष में भी नये–नये कीर्तिमान स्थापित कर रही है। कल्पना चावला व सुनीता विलियम्स अंतरिक्ष पटल की खास पहचान हैं। अभी हाल ही में भारतीय मूल की तीसरी महिला डॉ0 शाबना पांडया को नासा ने 2018 के स्पेस मिशन के लिए ''सिटीजन साइंस एस्ट्रोनॉट'' के रूप में चुना है। इसके अलावा एक अन्य क्षेत्र में भी महिलाओं ने अपनी मजबूत दावेदारी दिखाई है। देश की मिसाइल सुरक्षा की कड़ी में 500 कि0मी0 की मारक क्षमता वाली अग्नि–5 मिसाइल का सफल परीक्षण कर टेसी थॉमस ने पूरे विश्व में भारत का नाम रोशन कर दिया।[11]

इस प्रकार वर्तमान में महिलाएँ केवल अपने पारिवारिक दायित्वों के निर्वाह से सन्तुष्ट नहीं रहती क्योंकि आज की आर्थिक दशा तथा बदलती जीवन शैली से उनमें अलगाव व हीनता की भावना पैदा होती है। परम्परावादी जीवन सम्बन्धों के विपरीत समानता व स्वतंत्रता के जीवन मूल्यों के प्रति बढ़ता हुआ महिलाओं का आकर्षण, सामाजिक, सांस्कृतिक बदलाव को प्रेरित कर रहा है।

1. सोशल चेंज, अंक–मई, 1972
2. एपस्टीन– सिंथिया, एक वुमेन प्लेस, 1976
3. योजना–स्त्री सशक्तिकरण, रीना सोनेवाल कौली, सम्पादकीय कार्यालय योजना भवन, संसद मार्ग, फरवरी 2013, नई दिल्ली।
4. नारीवाद आखिर है क्या? कमला भसीन, सईद खान, प्रकाशक–जागोरी सी, 54,साउथएक्सटेंशन, पार्ट–2, नई दिल्ली, संस्करण 1986, पृष्ठ–5
5. प्रमोशन (खण्ड–3), चित्रा मुद्गल प्रकाशन, सामाजिक प्रकाशन, जटवाड़ा, दरियागंज, नई दिल्ली, संस्करण 2009
6. मधु काँकरिया का रचना संसार, डॉ0 उषा कीर्ति, 2012
7. शैलजा प्रकाशन,
8. मधु काँकरिया का रचना संसार, डॉ0 उषा कीर्ति, 2012
9. उपनिवेश में स्त्री–प्रभा खेतान, प्रकाशन–राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2014, पृष्ठ–53
10. संयुक्त राष्ट्र संघ, 1980 रिपोर्ट
11. विज्ञान प्रगति–मार्च
12. 2017, पृष्ठ–73

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
ISSN 2349-638X
www aiirjournal.com